

1565

I

RESEARCH

ASHA ARCHIVES

1565 I

ASHA ARCHIVES

ASHA ARCHIVES

Handwritten text in Devanagari script, likely a title or description of the manuscript's content.

Copyright - Suresh C.

2014

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

एव तावनपूषा आह न पूजा कृपा कर्मल श दा आसूर्याय श्रद्धा नमः ॥ पुण्यार्थ
 नमः ॥ प्रादोपादार्थ नमः ॥ अवाहन ॥ पाद्यादि तयक ॥ स्नानवायक ॥ सिरुलं
 तिक ॥ डंका कृपायक ॥ स्नान तयक ॥ आकि कृपा तयक ॥ गात्र याय ॥ ॐ सूर्य
 सामहि ता आदि ॥ ॥ पनगुगूपादार्थ काय ॥ पनपूजा र धियक ॥
 वाक् डं हनं कु ॥ ल डं हाना काय ॥ पमनं ना वाया पूजा र धिय ॥ दान पति डं
 हनं कु ॥ ॥ पन आकि कृपा हा कलपं वा न्य ॥ गुग्गु ॥ तना काय ॥ हा

न आकि कृपा ॥ वंदु ता वा न्य ॥ ॥ पन सूर्य पूजा याय ॥ देव स्नान याक ॥ ॐ
 य लंगे ली ॥ हृस्फ नं दन ॥ ॐ पु कि विं मू आदि ॥ अरि षक काय ॥ ॐ अरि षक ॥
 पन धूं व्या का अवाहन याय ॥ ॐ ग वन आम गू आ ग ति जल याय आ व स्र च
 जाद व द वी ज्य वाह ना य व ड धूप नमः ॥ न्या भजा प याय च ॥ ॐ ई व व संध अ
 स्था हा ॥ १०८ पन सूर्य व संध काय ॥ प्राद्यादि तय ॥ आम गू आ ग ति जल याय
 आ व संध अजाद व द वी य व जल क मू प प्राद्या च म ल धं पु ति क स्था हा ४ ४

स्वानवाय ॥ ॐ वसुं अजाय स्वाहा ॥ ॐ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ॐ लक्ष्मीं नमः
 वासिनाय स्वाहा ॥ ॐ वर्ज्यं प्रणिष्ठा स्वाहा ॥ सिंहलं गिरि ॥ लासाकाय ॥ ॐ
 यथाय ॥ ॐ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ साधनापायकादवी ॥
 लक्ष्मीं नमः ॥ नेवय स्वाहा ॥ ॐ दृग्सर्वं नेवय दानं संयुदासयाम् ॥ मठ
 धिय ॥ ॐ दिपाय सर्वका ॥ गायत्री ह्य ॥ ॐ धर्मा ॥ ॥ धन हानिः
 नावाय पूजार्थि य ॥ नृनीयाय ॥ ॐ इत्युक्त्वा ॥ धनं गुप्ति ॥ लुप्तं दत्तं ॥

मंलुल्लाहा गिरुप्रय॥ दानं ग्वमय॥ जाकिरुना अनायाय॥ मंका विविधितः
 सलावसु अकाय॥ प्राद्यादितय॥ अमरु अगुत्रमंलुल्लाहा वमनार्थपु
 गिरु स्याहा॥ जाकिरुना प्रवावाय॥ उं उं ई व ई कू सुमा जलीनाथ हा मंलुल्लाव
 जपुष्य न्या गहा॥ स्वानवाय॥ उं ह म अ वा नू व न मि॥ त्यादि॥ सिं कू ल गिरु॥
 वरुं ग न्द स्याहा॥ ला स्याकाय॥ नातु याय॥ उं न मा व् अ य उ त्र व न मा अ म्मा
 य ता ज ली न म स र्वा य न मा न म र ग क्क ह त्वा न म स्यामी अगुत्र नार्थपु सिध

मयस्या॥ ॥ धनजाकिलखहायक॥ ॐ नमः शिवाय मया मय॥ धन
 जाकि कना हाकलपं वीन्या॥ ॐ नमः शिवाय मया मय॥ धनवलीजाकिल
 खहायक॥ नमः शिवाय सर्वधमातां॥ धनस्वानवीय॥ ॐ नमः शिवाय स्वाहा॥
 सिंहल गिके लास्याकाय गीतयाय॥ ॐ नमः शिवाय माहात्राजा॥ नमः शिवाय
 उजाऊतां॥ ॥ धननेवद्यकाय॥ मयविय॥ मलुतविभजनया
 य॥ उजमानयात्स्वानविय॥ गहस्पदनक॥ धनसमाधीदन॥ ॥ धनक

लसपूजायाय॥ स्तुतः गगना सहस्रं सिंहसुखदास्मृतं॥ ॥ धनमलु
 लपूजायाय॥ पितृसुखदानेवजसदनकामलुलतय॥ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय
 वसुधाय स्वाहा॥ १०८ ॥ निजाजनः मयुक्तगामाय॥ स्वरासुखप्राद्यादित
 य॥ अमृतं शिवसुखमामहामलुलतुकाजकायप्राद्यावमनार्घ्यपुनिक
 स्वाहा॥ स्वानवीय॥ ॐ वसुधाय स्वाहा॥ ॐ वसुधाय स्वाहा॥ ॐ लकि
 रतनिवालिनीय स्वाहा॥ ॐ वज्राय स्वाहा॥ गजनिवाय स्वाहा॥ ॐ गज

यविलाकृतं च जाय स्वाहा ॥ उं वज्रपा लीय स्वाहा ॥ उं गुलादवीय स्वाहा ॥ उं उं
 मज्जलेन्द्राय स्वाहा ॥ उं वज्रलयाय स्वाहा ॥ उं विविक्कलुलीय स्वाहा ॥ उं कलिमा
 लीय स्वाहा ॥ उं माकुदाय स्वाहा ॥ उं चलन्द्राय स्वाहा ॥ उं गुफादवीय स्वाहा ॥
 उं गुफादवीय स्वाहा ॥ उं सज्जतिदवीय स्वाहा ॥ उं वन्यकान्नादवीय स्वाहा ॥
 उं गानिरुडाय स्वाहा ॥ उं पूर्णरुडाय स्वाहा ॥ उं धनंदाय स्वाहा ॥ उं वैभवर्क
 य स्वाहा ॥ उं वज्रपूष्पपुत्रि स्वाहा ॥ अजमलुलधिप ॥ सिंहलंगिक ॥ उं का

कृष्णाय ॥ स्वान्तय ॥ नेवद्यः मग्नः ॥ उं धर्मार्वा ॥ इइ इल इल कय ॥ लास्या सु
 ति ॥ उं कल्यादिभ्यः न विधिनाप त्रिपथमानां ॥ या अजया वि विधिजलसुवर्क
 मया ॥ पूर्णकजा गिरुवनं सहस्रं सर्वगी सर्वत्राक जननी पुलमामी रुकाः त्वं
 दवी सर्वगुलजलनिधनरुतं सत्यार्थकार्यधनधन्यसमविहता ॥ दाया
 उइ इव समगजलाः तानमा मि सिजसीतवपादपुर्म ॥ ॥ धनजैम्य
 यदवपूजायाय ॥ प्राद्या दिगया ॥ अमरुता ॥ उं मलदवगाय प्राद्या चमनार्ध

पुनिक स्वाहा ॥ स्वानवाय ॥ ॐ उम्वजउपन्दाय स्वाहा ॥ ॐ नार्य ॥ ॐ उम्वलायनम
 स्वाहा ॥ ॐ सर्वजंम जाय स्वाहा ॥ ॐ धनाधिपतनम स्वाहा ॥ ॐ धनंदायनम स्वा
 हा ॥ ॐ वेववर्लुयनम स्वाहा ॥ ॐ कृष्णलायनम स्वाहा ॥ ॐ वज्रपूष्य पुनिक
 स्वाहा ॥ पूजालास्वामि ॥ ॐ नृगिकृष्णवर्लु ॥ सर्वसार्यधनाधिप ॥ सर्वस
 त्वपजीगार्धकृष्णार्जुनमस्तु ॥ नेवयकाय ॥ मन् ॥ ॐ धमार्वा ॥ ॐ धन
 ॥ धनंदायनीपीत ॥ मंरवलवियक ॥ ॐ संस्थादकृष्णिक स्वाहा ॥ पंचगव विय ॥ ॐ
 ॥ धन धनंदायनीपीमइसाधनतकपूजायानागमः सजीस्वन्नंथ ॥ ॐ धृष्ट कृन्नंथ ॥ ॐ

वज ॥ धन उम हायक ऊऊमानयातु ॥

ॐ उम्वजंमयं च वदधीति नृकृष्णरितं ॥ सर्वपापविना अर्थं तृगार्थं पविनच ॥
 हानं मंरवलवियक ॥ ॐ उम्वलुलवाय ॥ ॥ धननावायक ॥ पूजातु विय
 क ॥ ॐ उम्वलुलदनक ॥ वलावियक ॥ विमंजनयाक ॥ निजाजनयाक ॥ मन्
 गावागीयक ॥ ॥ धनरुमिधनयाय ॥ धनमंलुधाय असंजुलाप
 वीनधियकातय ॥ ॐ सर्वगाथागतानाक ॥ सर्वगाथागतालयः सर्वधर्मग
 नेजात्माः दधमंलुलं मूकमं ॥ ॥ धनजाकिस्वन्नं पाधमिनक ॥ ॐ स

मन्त्राहर्त्रुमावृद्धाऽर्लषादिदुसंस्तिगा॥ ॥ धननिख्यपितमिऊया
खगुगुतिथकायक॥ मिसायाउगुपकायक॥ धनदभनाखकने॥ जाकिवन
के॥ गगुहमोसिह्वादकि लजान्मलुलपुथियांमानापगतजान्॥ कृतेपूणाउली
वैश्वगुदभयितया॥ ॥ हनिषा॥ धपिगुसुद्धरुमिऊयावागु॥ धपिं
गुगुमिऊसां॥ ऊअप्रीनव्या॥ खगुपुलिथकाया॥ खानमालाऽऽद्यादिऊनाः
कृताउली॥ लाहाहाकलपाअऽगुयकइसां॥ धअगुविहसुठकयका॥ अ

वसुधजादवीयागु॥ वृहधर्मकपाकिमिगः कलपालीग्राहदयकाविऊई॥
ग्राचार्यवाचहनिषा॥ गगुधयधुगुपासइसां॥ ॥ कूलपूयावाः कूलइ
हिगावा॥ ऊनधनगुयगगकंति॥ हनिषापी॥ धगुलीग्रावसुधजादवीयागुः
वृहधर्मदन्यगु॥ गगुपुकालंधसांकिंकन्यनं हनिषाः गधजाधसा॥ गधवाः
गुकानकजलं सुवृहवान्यगु॥ गधवाकायमवानं सु॥ कायमवानं सु॥ हानंरिदु
पिसंनं सु॥ रिदुनिपिसं सु॥ धवृहदनडियावान॥ हानंममगुउपाधंवाना

धीरा न संशु ॥ दाक्षिणा धाय ॥ दासीश्या वीपी न संशु ॥ त्यागि श्या वीपी न संशु ॥
शिवसुख जादवी यागु वृद्ध न संशु ॥ धवृद्ध नाया पूज्य गथा जा धासा ॥ कृष्ण
पूज्य धासा ॥ ह भिष्य ॥ शुक्रस्य न शिवसुख जादवी यागु वृद्ध न संशु ॥ राडव
कृष्णयाः इति याः नृति यावृद्ध ॥ धधशु मनसुद्धयाना ॥ उक विरु न संशु वया
न जा धासा ॥ नृलः शुशु कार्य कामनाः पूज्य मश्या धान ॥ नृल पूज्य श्या धा
मना ॥ उक विरु या ना रावयासा ॥ धशु मनसुद्धयाना कामना पूज्य श्या ह भिः

ष्य ॥ धधिक्क पजम नृली साका शुशु वसुंधा जादवी याक नमस्कात्रयाना ॥ ध
धरशु कामना धान ह भिष्य ॥ गथा जा धासाः रूपत्रय नृल ॥ जिमीस्यः धर्मः
कर्मः पापः पूज्यः रावः रगतिः कृन्मस्य जिमीस्य ॥ जिपी नृनार्थ धयागु कृ
न्मस्य ॥ जिमीस्य ध कामना यानागु ॥ कलपालयाक रावरु क्रिया ना ॥ धर्म
कर्म ॥ वृद्ध वलया यगु ना ॥ धसमस्य पूज्य ना विष्काई कलपाली पुस्तक्याः
कलपालयाक सहस्रका ठि नमस्कात्र ॥ ॐ ॥ पूज्य धिजगत् पूज्य ॥ ध

नपि जह न धनं ॥ हानं संख कस्य नं ॥ संकानमदया वानी ॥ जल धव दूना ॥
संकानदयमाधकापुति ह्याना ॥ धव दू नुद विनु नंदन धसा ॥ संकानद
यकाधिया ॥ हानं गुगु कामनायाना वान ॥ जपवाः धनदव्यमदया वानी ॥ ज
ले अया धनदव्यनंदया आयी ॥ धन्य धन्य ॥ चतुर्विध विहिनं प्रगु रया आयी ॥
नयमदया वानी ॥ गान्यमइ धका ॥ धाव सुधनाया गु वरू दना वानी ॥ जल
अयाः सर्व सखादि ॥ जव कसां प्राफि रया ॥ पगु कुनं जाल किं वा गया यी ॥

जधं हसिष्य ॥ पधिगु दल कसां लाययात् ॥ सिंति कायदया अमख ह निष्य
विना पधि क आव सुधनादवीया केरावर किमयासी ॥ जधं कायदया मख
दल हसिष्य ॥ सदा सर्व कार्य चल्पयाना वी ॥ जपवा च प्रमणा सानं ॥ असपा
लया गु पुति माद यका ॥ प्रजा रावया ना वा हसिष्य ॥ जधनं मइ सा नाम उ
ककया अनम स्कायाना वा हसिष्य ॥ ॥ उ विदा रत्ना ॥ जदजी
आरव नि ॥ याधि ग च रत्ना वसत्वा ॥ जयाधि गारव नि ॥ हसिष्यः हानं संख

ई सियां ॥ उगीउरुयावानी ॥ नराकूयायः किउगीउरुयावानी ॥ अकयाउ
पायकूयाय ॥ गथयायः किनरुसां भवगुउपायमइ ॥ किनरुसां थथिऊ
उगतयासागुरुयावानी ॥ वसूअजादवीयागुवुरूधर्म ॥ किनदन्यथका
मननरागपा ॥ अवसूअजादवीयागुवुरूधर्मदनी ॥ अकयापूयनरुसाः
गथिगुरुलपाफिरुयालाअसा ॥ पगुदुदगीउरुयावानी ॥ अयाकुनकल
सुवर्ह ॥ नृप ॥ धनसंपुति ॥ संपूर्णपजापूहिरुयकाविया ॥ पूनवलिः हसि

अहानः अवरुदनायापूधनं ॥ उरुसियाः याधिनीकयावानी ॥ आगपिगइ
यावानी ॥ नानाकूअगगारादिरुयावानी ॥ अआगदहं सानुयानाकूकावियाः
अअहनिष अकयाकाजल पथिऊपजमचलजीवसूअजादवीयागनमसा
जयायगुअ ॥ ॥ पुअकुउरुजाहिसूवः सुगअजलसानं ॥ हसिषः
गअजाअसा ॥ अवरुदनायाग ॥ उगुपुकालमाजावानअसाहसिष ॥ हापी
वलागुवयाअसा ॥ सुअहापी असूर्यलूयठा ॥ सुगअजलसानंयाय ॥ माल

कृय ॥ सुचिवर्तुष्यः धर्मायायधुंका ॥ उभावृक्षधः पचाप्रचालपूजासा
दाम्कलसकठादयक ॥ ॥ कायकृतिविद्वपापः वाचिकनुचतुर्विधः
हसिष्यहान ॥ दलं कृषलयाखकन ॥ गधधसाः मन्त्रधुर्नक्षया ॥ पापः
पृथखमसिया ॥ कन ॥ पशुधक्षया ॥ गधधसाः मन्त्रधुर्नक्षया ॥ पापः
पापलगा ॥ वचनयाना ॥ पापधगा ॥ मननयाना ॥ पाप ॥ चगा ॥ कृध
हसिष्यः धपापक्षसां भावकयानिति ॥ ॥ वगुवसुधगादवी ग्रावाहनयाना ॥ ८

अकचिह्नयानाः धवृक्षधर्मदनावाधकाः ॥ गवजावायुगुर्न ग्राकादयका ॥
विष्काग ॥ ॥ नसत्यघातयिष्यसिः नहजिह्वपञ्चक ॥ हानहसिष्यः जाव
तधय ॥ गवधधसाः गवसुधगादवीयागुवृक्षधर्मचलयायवधति ॥ भवया
गालकायमश्या ॥ भवयाधनसं गारतयमश्या ॥ भवयाककामकृदायायमश्याः
भवयागृहसखलायमश्या ॥ कठपित्तइरवक्षयकं किनुवचनतयमश्या ॥ जाना
वापीक्षयावियमश्या ॥ भवसुगुर्नल्लाकेमश्या ॥ भवयाकार्यसस्यकावियमश्या ॥ ८

I

565

RESEARCH

ASMA ARCHIVES

पे नुच अय ॥ कतपिंतः कारववृत्त हायमला ॥ जयापाल अयः च नयायमला ॥ जय ॥
 दमकू लल अया गुपाप ॥ १० धर्मया ना वा कृत्यः ॥ अलीपाप ना लाल ह सिष्य ॥
 भामिष पजी वजिरू अय ॥ ला ॥ हा ॥ वि ॥ वि ॥ मध्यपानः ॥ अलीगा लाल ॥ हानम
 रवनागुरवना अयमला ॥ प्या धन रुयमला ॥ वा ॥ अयमला ॥ गीत अयः मन हा ल
 मला ॥ धमं अकाजी पी कृत्य तथा वान नमला ॥ जय जगज नयायमला ॥ रवा ना सी
 दन्यमला ॥ अलीकर्म गाल लाल ॥ उं कवर्णा स धल जय माल ॥ नक विरू या ना ॥

वस्र अजादवीया गुवृत्त धर्म सच लयायमालः ह सिष्य ॥ ॥ स्व गृह वापन -
 गृह वा गुवि कृत्या समा जय ॥ ह सिष्य ॥ अ वृत्त दन्य जनमाला असा ॥ ध गु कुरु लसा
 यू ॥ जय वाम वर पिं गु कुरु न्यू ॥ गु गु पा से स्रु रु या वान ॥ उ उ र पा स्रु अ वृत्त दन्य मा
 ल ह सिष्य ॥ पुनर्बलि हाननः हा पा अ सी सा जस ॥ नु न्य रु या वा गु वर वत ॥ हा पां स्त्री रु या
 गु मं लु ल दतू ॥ हान जयि मं लु ल दतू ॥ हान वायु मं लु ल उ त्प ति रु ल ॥ गल सूर्य
 मं लु ल उ त्प ति रु ल ॥ पृथिवी मं लु ल उ त्प ति रु ल ॥ गु मल पर्वत उ त्प ति रु ल ॥

धधीकागुडत्यतिरुया वागुली ॥ पश्यसंयगु द्वाद्यादयाशन ॥ नृपगभ्यरायमा
नरुया वागु ॥ नृनेग २ गुद डाल स रालाना वागु ॥ धर्म लुलया मध्य विकाना वा
क्रु श्रीव सुख जादवीग धर्वा धासा ॥ ॥ पितवर्क नृक मुख ॥ षठ र डाल ली
गा लन ॥ ॥ पुनर्वालः गधरा धासा वसंध जादवी यात्रप ॥ नवजीवर्क धाय ॥ डि
षदया मज्जली रुया वाक् ॥ कासुगुवर्क रुया वाक् ॥ नृक मुख धाय ॥ कपा राल धज
लपा वाक् ॥ रूका गहाने रूक धजलपा वान धासा ॥ उगुला हाति सकल सत्य पिं

तड धजयाना विकाना वान ॥ श्रीग धजग पिरी नमस्काय याना वान ॥ निकागुलीः
नृत्तमा वाक् ना वान ॥ रूका गहानिः सकल यात्रवज दान विया वानः पि ध धिया वान ॥
खगुयामूल गहानि ॥ कल सजाना वान ॥ निकागुली पुस्तक पुस्तक जाना वान ॥ रूका
गुली धन्य मज्जलीः उगु ० जाना वान ॥ धली धजलपा वाक् श्रीव सुख जादवी यात्र
नमस्काय याय ॥ नृनेग २ ती सातिया विकाना वाक् ॥ नृनेग २ देव नापि रू वाह्य वा
पहसाम धद धस विकाना वान ॥ पडा ध धमनी विकाना वाक् दवी ध ॥ नृ धाक्

मास ॥ चंडारमंलुसविकानावानधकाहालय ॥

॥ धनधगम्याचंडार

मंलुलपजायाक ॥ जाकिलखपायादितयक ॥ जामरुजालक्रीरुजवसुधगाद
दीयपायाचमनार्धपुनिकुखाहा ॥ स्नानकाय ॥ उंवसुधजखाहा ॥ उंवसुधजायः
उंलकिरुनिवासिनीय ॥ वजधजभगजतिर्याषतथागगाय ॥ श्याविलाक
नचगाय ॥ वजपालिय ॥ उंलादवीय ॥ ऊमलऊनचाय ॥ वजूलय ॥ चिवि
कूंलुलीय ॥ केलिमाजीय ॥ माऊन्याय ॥ वजचाय ॥ शुफादवीय ॥ सुशुफादवी

य ॥ सनसुमिदवीय ॥ वनकाकादवीय ॥ मानिरुचाय ॥ प्लूरुडाय ॥ धनचा
य ॥ वेणुवर्लाय ॥ वजपूषीपुनिकुखाहा ॥ सिंहनिक ॥ ऊकाकखायक ॥ स्नानका
यक ॥ धडवजी ॥ हलहल ॥ ग्या ॥ ग्वय ॥ वाकूमधा ॥ दकुना ॥ खूलूमधाकायक ॥ धं: म.
धनजाकिर्क ॥ उंवसुधजासदानत्वा ॥ डाजीडनवगाजली ॥ साधनापायका (नयाक
दवीजालकिर्नमसुत ॥ ॥ धनऊमलनसिपजायाक ॥ प्रायादितय
क ॥ ऊऊमलायप्रायाचमनार्धपुनिकुखाहा ॥ स्नानकायक ॥ उऊमजायखाहा ॥

धनकादवतापूजायाक ऊजमानयाग ॥ धनदनपीकदवपूजाकायके ॥ स्त्रीः जा
कि ॥ सिंह ॥ डीका ॥ नेवद्य ॥ धूः धन ॥ दकुल १ गयकाकाय ॥ ॥ धनधडी
हूअन्यवागुवलीविरा ॥ अक माहका ॥ धर्पपूजा ॥ धनसकसिर्नकिगवकायके ॥
उं नमाधुधयगुगुयनमाधर्मायताजलीनमासंघायमहसुम शिमगुगुचलल
कमलायमिरेग ॥ हं ह्यानमस्यामी शिगुगुनाथंपुसिद्धमडस्यगु ॥ अदकजल
सहलीकागमगत्यप्रादि ॥ वसुधायगु ॥ उं वसुधायसदानत्वाडाजीउन

वताजली ॥ कलभयातनं ॥ हं हं जं धापजमंदवत्यादी ॥ माहां कालकृष्ण
वर्णसमागुठप्रादि ॥ स्वस्तीयाग ॥ उं शायवृक्षिज ॥ वृक्षिप्रादि ॥ स्वगुगु
सयाग ॥ जडावदाप्रादि ॥ हं हं सिंहसूयाग ॥ वसुधायसदानत्वा ॥ मयाग ॥
लूजसंविजसंजार्गप्रादि ॥ मीलुलयाग ॥ उं वसुधायसदानत्वाडाजी
उनवताजलीसाधनापायकादजीलकिममसुते ॥ वलीयाग ॥ ॐ न्दा
दयामहाजागप्रादि ॥ दानपुतिऊजमाननेपालमलुलेत्रलिगापुत्यमा

हानगलः सर्वं नममाहाविहाजुं मय्यतिष्ठ ॥ ॥ नामायीध
ममवसि कल्याण कामनार्थ ॥ ॥ सजीव सर्वजाग निवाजलार्थ ॥ लक्ष्मि
लसंज्ञानादि सफवृत्ती कामनी ॥ वर्षवधन वसुधजावृत्तावनकृयाकर्म
लज्जुष्ट जीवपृष्ठाधपदिपतेवयादित्सर्ववृत्तिपजीप्लूनमस्तु ॥
धनगुणपूजा ॥ दकुलकायक ॥ कलसे ३ मीलुल १ सहली १ मयागक
भासध ॥ धनदनपीकनी गुणपूजाकायकः ॥ ३ ॥ स्वः ॥ जाकि सिंहः
॥ ३ ॥ कुल

कया ॥ किरुनिसगानकायक ॥ ॥ धनधनदनपिंगविभजनयाक ॥
यकाचिक ॥ ॐ वसुधजायवर्जस्तु नम ॥ दकुलकायकः ॥ ३ ॥ १ ॥ धवा ॥
ऊमासुचकवियधजदनपीनी ॥ ॥ धनधनगुणमिलुलजक
विभजनयायकूनीकायमस्तु ॥ ऊजमानपीतसिंहिक ॥ धनदनपिंगका
पपावकामीलुलतयक ॥ ॥ धनपाजलयाय ॥ ॐ ॥ ४ ॥
धनसजीरुकायकाथं वागुवाकपूजायाय ॥ ऊमाधकासुचक ॥ जलकोमाजीपूजायाय

१ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

॥ स्वाय ॥ माहनी ॥ सुकलो ॥ सिंहु ॥ अपि ॥



सुकुटा ॥ यकु ॥ माहनी ॥ काकु ॥



अलीअपनधूनकाऊऊमानयातपूजाहृषियक ॥ हुनमाहुगवभूषणक
हुजाजायांतअगतायीइहंभूसंभवेसंवृक्षयः दानपतिऊऊमानस्य ॥
नसिदिनशामरुशिवसुखजामाहादेवीआवाहनाः संपूर्णगलस
माहकाजशायुधिः चक्रसंभजवर्जवाहाहि अर्चनदवागुलीवेअन
जायकोमालीदवदवीआवाहनाः अथसंभजहृषियकपूजाकृत्या
कर्मलजार्जकल्वपूषाहाऊननमस्कनामहं ॥ लअज्ञानकार्य ॥

आदि

मनाकाय

पनजा न ॥ उत्रवृद्धवान ॥ मंखपूजायाय ॥ दवयान्नस्तानयाक ॥ ज्ञावाहनयाय ॥
श्रीमन् श्रीगोवत्सुखजावालको माजीदवदवीयवजधूपनम ॥ आप ॥ ॐ रुद्र
रुकोमालीयईरुठ स्वाहा ॥ अत्र २१ स्वरासुखप्रायादितय ॥ श्रीमन् श्रीगोवत्सु
खजावालको माजीयप्रायाचमनार्थपुतिके स्वाहा ॥ स्वानवाय ॥ ॐ वसुध
जायनम स्वाहा ॥ ॐ ईं कुं वसुधजायनम स्वाहा ॥ वसुपुत्रयनम स्वाहा ॥ ॐ को
माजीयनम स्वाहा ॥ ॐ काठहोत्रवायनम ॥ ॐ जलचंदनम ॥ ॐ वृद्धिद

वरायनम ॥ ॐ कर्जठवृद्धायनम ॥ ॐ अटहासकुणायनम ॥ ॐ उमयुपा
नयनम ॥ ॐ पुमर्चिदायनम ॥ ॐ मनागजाजायनम ॥ ॐ लकिव नम
नजायनम ॥ ॐ कोमाजीयनवजधूपनम ॥ ॐ सिंहुलीतिक ॥ ॐ
काष्ठवायक ॥ समयकायः मवियजधर्मा ॥ लास्यातुयाय ॥ ॐ कोमा ^{वसुध}
जीमयुजात्राः मकिहसाकजा लुगा ॥ नकावर्लसुखा रागी ॥ कोमाजी ^{जासदा}
वनम सुते ॥ ॥ पनगुर्मलुलदन ॥ वजीविय ॥ यनमाहनीस

जीवचिकनीं हुं ल॥ मं लुलनय कायरनीनय॥ पंचवृक्ष स्वर्णपूजायाय॥
 धनका काचर गजजमानविया सिद्धननक॥ उउयाताकनवकुतायादि४
 धनमाहनीरुय॥ ॥ धनजजमानयागुर्मं लुलदनक॥ जह
 स्यकाय॥ विजजनयाक॥ धनसमाधिदन॥ धनका॥ सर्वं॥ माहनी॥
 सिद्धखाद्यधपी सुकुदापूजायाय॥ न्नावाहन॥ अरुगवनममचछाणीः
 आयवृक्षिगलसमाहीकालचक्रसंमलवजवागहि न्नानीद्वानूली
 ॥ धाप्रियादडीममं रुपाउतय॥

वेण्मनजायवर्जधर्पनम॥ जायध॥ उं र्वै लुकागहईरुठ स्वाहा॥ २१॥
 धनमं रुपाउतयरुति॥ उं रुहाहिं न्ना र्वै स्वाहा॥ ॥ धनयाय॥ उं अइ४
 खठकानवीय॥ धनप्रायादिस्नानवीय॥ उं न्नायवृक्षिय स्वाहा॥ उं न्नाव
 क्षिय॥ उं सुखवृक्षिय॥ धनसंमानवृक्षी॥ उं सफवृक्षिय॥ उं गंगलपुति
 य स्वाहा॥ उं गल स्वजाय॥ उं जनपुतिपुडिगाय॥ उं न्नामादाय॥ उं नुदई
 काय॥ उं न्नाहाकाजाय स्वाहा॥ उं ईकाजाय॥ उं ईकजायाय॥ उं न्नाईकाजाय॥

माहनी ॥ ॐ नैलाक माहनी यस्वाहा ॥ ॐ सर्वदा किनीय ॥ ॐ माहनीय ॥ ॐ
रुनीय ॥ सिंह यात ॥ ॐ ववर्ज वाजा हिनमसाहा ॥ ॐ हायायामिन्यनम ॥
ॐ हिंमाहनीनम ॥ ॐ हहसंवासनीयनम ॥ स्वायथापीयात ॥ ॐ कान
न्यस्वाहा ॥ ॐ पत्रमानन्द ॥ ॐ विजमानन्दय ॥ ॐ सहजानन्दस्वाहा ॥ सुक
यात ॥ ॐ वेचवर्हयस्वाहा ॥ सिंह लास्यातात ॥ ॐ शयवधिउचवधाय्यादि ॥
ॐ हजंवापत्रमंदवकार्यसिधियादि ॥ ॐ माहाकालकृष्णवर्हयादि ॥ ॐ संव

जायसर्वकृष्णनयादि ॥ ॐ नत्वाशिवजवाजाहियादि ॥ ॐ निजनीलाउनीजा
रायादि ॥ ॐ उरुसंविजलयादि ॥ ॐ यकायमवियउधमावा ॥ ॥
धनकोमाजीवापुत्रायायवायवागुवाकननुदाक ॥ धनवाकपुत्रायक ॥ व
प्रियय ॥ सकसियांकिग्वकायकवाक्कअहननु ॥ दानपुगीनडाह ॥ ॐ उरु
जादकुल ॥ ॐ श्री ३ ॥ ॐ कोमाजी १ ॥ सहजी १ ॥ क्रयातउधसर्ध ॥ पंचाक
मकायक ॥ ॐ ॥ सिंह माहनीकाकायउजमानयागतवक ॥ सिंह श्रीगीतय ॥

बुवा हा या कडां गराह ॥ थ सरु सनानं ला रया ना काल ॥ सापंच मा हा पा पला य मा ॥

सक सिंया गिय ॥ वका कया विय ॥ थनखाय काय कोमाजी काय ॥ थनपंचा

कूळ विपन थिय ॥ समय काय ॥

॥ कोमाजी खान काय ॥ थन हा

ऊन याय ॥

॥ ॐ तिज कोमाजी प्रजावृक्षि समाप ॥

कुमाली या वाक्य ॥ ज्ञावाहन ॥ श्रीमत् श्री श्री बाल कोमाली गल समाहा कालाय

वज्र धर्पनम ॥ न्या हा आप ॥ ॐ हूँ हूँ कोमालीय नम स्वाहा ॥ अत्र २१ स्वरा

वसुधा पाशादि स्नान वीय ॥ ॐ हूँ हूँ बाल कोमाजीय स्वाहा ॥ ॐ हूँ हूँ लेन वाय स्वाहा ॥

जल चंद स्वाहा ॥ वं हिंद वताय स्वाहा ॥ कल जल काय ॥ गृह हा सकृ गाय ॥ ॐ मज्जाय ॥ पञ्च

नाग राजाय ॥ लक्ष्मी व कसम न नाय ॥ वं हूँ व नाय स्वाहा ॥ मोहाल किं य स्वाहा ॥ प्रजा ला

स्वास्त्युति ॥ कोमाजी मयुजा गृह ॥ किं हूँ हूँ कजा गृहा ॥ जक व हूँ हूँ सुभला गी ॥ कोमाजी

वन मस्तुति ॥ समय ॥ अत्रा ॥ मग ॥ नाय ल हा ॥ थन वाक्य प्रजा ॥ वना विय ॥

ऊन माने गुरु मनुदन क ॥ किं हूँ हूँ काय ॥ ॐ हूँ हूँ प्रजा द कूळ काय ॥ थन पंचा कूळ काय ॥

विप थिय नम ॥ सिंहा का कया नन क ॥ सक न ॥ तिय जा ग तिय सिना स्वाहा ॥ सिंहा य सक

सिंया ॥ कोमाजी काय दवाद्य राजतया ॥ अपि न थिया काय ॥ पंचा कूळ विप थिय ॥

थन कोमाजी काय ॥ अ सुवा कूळ वा नय का द व काय ॥ ॐ हूँ हूँ ति स्त्री रा ग विय ॥ ॐ मज्जा

यने विय ॥ हाने साय सिय या ना कं नू स विद्या हय क मा क ॥ ॐ हूँ हूँ हा क ॥

वंका स्वा ॥ सिंहा जा कि प्रजा याय ॥ अली ॥ गिता ॥ ॐ न नी ॥ ॐ याय माल ॥ ॐ ल सं य

काय ॥ ॐ ऊन या क ॥ म ॥